ISSN 2320-768X, Impact Factor : 2.2
Vol. IX, Issue I (April – 2021)

हरियाणा की सांस्कृतिक परंपराओं में लोक–संगीत

डा0 सुनीता सिवाच
एसोसिएट प्रोफेसर
इन्स्टीटयूट् आफ हायर लर्निंग
भगत फूलसिंह महिला विष्वविद्यालय (खानपुर कलां) सोनीपत

शोध प्रपत्र सार

किसी भी राज्य की संस्कृति को जानने के लिए हमें उस राज्य के बारे में जैसे वहां का खानपान, रहन–सहन, वि ोश अवसरों पर गाए जाने वाले अनेकों गीत, वहां के व्यवसाय संबंधी अनेकों चीजें जैसे कि महिला व पुरूश कृशि संबंधित या अन्य किसी व्यवसाय में किस प्रकार से कार्य करते हैं, आादि का पता लगाना आव यक हो जाता है। क्योंकि "संस्कृति" ही एक ऐसा भाब्द होता है जिसमें ये सब बातें निहित होती है। जैसे कि हम हरियाणा में वैदिक काल से ही वेदमंत्रों को संगीतमय बनाकर सदा से ही धार्मिक अनुश्ठानों जैसे कि घरों में भी यज्ञ आदि पर इनका प्रयोग होता आया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न धार्मिक उत्सवों पर भजन, कीर्तन आदि के आयोजन भी प्रादे िाक बोली में हरियाणा राज्य में देखने को मिलते है और अनेकों प्रकार के सामाजिक बुराइयों से संबधिंत गीत जिनमें बहुत सी सामाजिक कुरीतियों पर फटकार लगाई गई है और हरियाणवी संस्कृति के अंतर्गत आने वाले गीत जैसे वैवाहिक गीत, ऋतु संबंधित गीतों में इतना सुन्दर वर्णन किया गया है मानों कोई दृ य हमारी आंखों के सामने ही द ार्शाया जा रहा हो। इस प्रकार से गीतों के भावों के द्वारा श्रोतागण व द र्शकों को लुभा लेने की कला में सारा योगदान भाब्दों का व सांगीतिक स्वरों का होता है। जिसके फलस्वरूप वे गीत के द्वारा भाब्दों को प्रस्तुत कर देते है। इसलिए गीतों में हरियाणवी बोली के मनभावन भाब्दों का प्रयोग भी अपना वि ोश महत्व रखते है और हरियाणवी संस्कृति को देखने पर यहां के लोक गीतों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने का प्रमाण भी स्पश्ट रूप से दिखाई देता है क्योंकि यह केवल संस्कृति का संरक्षण ही होता है जिसके फलस्वरूप हम किसी प्रदे ा की संस्कृति को युगों–युगों तक सहेज कर रख सकते हैं। ताकि वह पीढी दर पीढ़ी हस्तारित होती रहे।

"हरियाणा" प्रान्त जिसका सम्बन्ध हरि अर्थात् भगवान कृश्ण से जोड़ा जाता है। लेकिन कुछ लोग "हर" यानि भांकर भगवान से इस राज्य का नाम जोड़ते हैं। इस हरि की धरती "हरियाणा" पर प्राचीन काल से मंत्रों की गूंज एक स्वाभाविक सी बात है। "हरियाणा" क्योंकि एक वि ााल प्रान्त है इसीलिए इस राज्य में संत महात्मा आध्यात्मिक रचनाओं की छटा को सदा से ही बिखेरते आए है। इसके अलावा यदि हम किसी भी राज्य की संस्कृति की बात करते है। तो यह कहा जाता है कि किसी भी राज्य की सांस्कृतिक परंपराओं के अन्तर्गत उस राज्य की संस्कृति अर्थात् वहां की वे ाभूशा, खानपान व वहां के सांस्कृतिक उत्सव आदि आते है। इसके अतिरिक्त आचार–विचार भी संस्कृति का ही हिस्सा होते है और इन सबको

ही किसी भी राज्य की संस्कृति कहा जाता है। यही सास्कृतिक परम्पराएं पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तारित होती रहती है लेकिन आजकल जैसे समय की मांग के अनुसार परिवर्तन हो रहा है तो भनैः भनैः संस्कृति के सभी हिस्सों अर्थात् सामाजिक जीवन में दिन प्रतिदिन कुछ नया देखने को मिलता है लेकिन फिर भी गांवों में जो अधिक आयु की स्त्रियॉ व पुरूश हैं वे ग्रामीण परिवे ा में होने वाले सभी उत्सवों (बच्चे के जन्म का समय, विवाह उत्सव, त्यौहार, श्रम कार्य समय) में गांव की मिट्टी की सोंधी हर एक खु ाबु के साथ इन्हें सहेज कर रख रहे है। हरियाणा प्रान्त के अंतर्गत हर ऐ अवसर पर गीत गाने की प्रथा है जैसा कि अन्य राज्यों में देखने को नहीं मिलता। इस प्रान्त में त्यौहारों की बात करें तो यह कहा जाता है कि

"आई तीज बो गई बींज
आई होली भर ले गई झोली।।"

अर्थात् तीज का त्यौहार जब जुलाई–अगस्त के महीने में आता है तो कहा जाता है कि तीज आती है और सभी त्यौहारों का बीज बोकर चली जाती है क्योकि तीज से ही सभी त्यौहारों की भुरूआत होती है और इसके बाद सभी त्यौहार अपना अपना रंग बिखेरती हैं। फिर जब होली आती है तो सभी त्यौहार समाप्त हो जाते हैं और कहा जाता है कि होली आकर सब त्यौहारों की झोली भरकर ले जाती है।

हरियाणा प्रान्त के सभी उत्सवों के गीत बहुत ही मिठास भरे होते है व सांगीतिक और सुन्दर लोकघुनों से ओतप्रोत होती है । विभिन्न उत्सवों पर गाए जाने वाले लोकगीत अपनी ऐसी छटा बिखेरते हैं कि गीत सुनने वालो को ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे साक्षात रूप से कोई चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया जा रहा हो। इन गीतों के माध्यम से हरियाण वी गायक अपनी रचनाओं को बखूबी प्रस्तुत करते है और अपने मन के उद्गार को गीतों के माध्यम से सुनाकर श्रोताओं की वाहवाहीं लूटते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियॉ व पुरूश कुछ नए–नए गीतों की रचना भी करते हैं। वे अवसर के अनुकूल एकदम से भाब्दों की रचना कर नए लोकगीत प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसे कि फौजी भाइयों के लिए गीत, आरक्षण से संबंधित गीत, सरकारों से संबंधित गीत आदि। उदाहरण स्वरूप जैसे पुलवामा हमले के बाद कई लोकगीत इस ज्वलन्त विशय वस्तु पर रचे गए।

हरियाणवी लोकगीत अधिकतर कहरवा, रूपक, दादरा, दीपचन्दी आदि तालों में गाए जते हैं। ये गीत पूर्णतः भाास्त्रीय संगीत पर आधारित नहीं होते बल्कि इनमें कहीं–कहीं भाास्त्रीय संगीत की झलक दिखाई देती है।

हरियाणा प्रदे ा के लोकवाधों में ढ़ोलक, नगाड़ा, घड़वा, ढप आदि प्रमुख हैं।

यदि हमें हरियाण्वी लोकगीतों का भण्डार विस्तृत करके सुरक्षित रखना है तो हमें ग्रामीण अर्थात् लोकगीतों का परीक्षण व संवर्धन अनिर्वाय है । संगीतज्ञों ने अभी इस दि ाा में बहुत कार्य करना है जो कि अभी किया भी जा रहा है। आधुनिक युग में भी कुछ ऐसे हरियाण्वी कला प्रेमी हुए हैं जो कि हरियाण्वी संस्कृति को वि ोश ऋतुओं के त्यौहारो पर हरियाण्वी संस्कृति की छटा को आज भी बिखरते रहते हैं। जिससे कि हरियाण्वी संस्कृति लुप्त होने के कगाार पर न पहुंचे। ऐसे कलाप्रेमियों में डा0 रघुविन्द्र मलिक (रोहतक) जी का नाम वि ोश रूप से उल्लेखनीय है उन्होंने अनेकों बार भगत फूल

सिंह महिला वि ववविद्यालय में ग्रामीण जन जीवन से संबंधित सभी प्राचीन वस्तुओं चाहे वह खेती से संबंधित हो, या फिर चूल्हे से संबंधित और या फिर पनघट से संबंधित हो, के द्वारा साक्षात अवलोकन करवाया। जिसको वि ववविद्यालय में अधिकारियों व छात्राओं के द्वारा खूब सराहा गया। हरियाणा राज्य की सांस्कृतिक परम्पराओं के अन्तर्गत गाए जाने वाले लोकगीत। जच्चा गीत, जन्म संबधी गीत, विवाह संबंधी गीत, श्रम गीत (चरखा गीत व कृशि गीत) पनघट के गीत, कार्तिक स्नान के गीत आदि ।

जन्म संबधी गीत (जच्चा गीत)

हरियाणा प्रदे ा में पुत्र जन्म पर लोकगीत गाए जाने की परम्परा है। पुत्र जन्म पर पूरे परिवार की खु ियों का ठिकाना नहीं रहता ज्योंहि पुत्र जन्म की सूचना मिलती है परिवार की मुखिया थाली बजाती है। थाली बजाना पुत्र जन्म का भुभ संकेत माना जाता है। पुत्र जन्म के छटे दिन छटी मनाई जाती है उसी दिन ये जच्चागीत व हास्य रस से ओतप्रोत गीत गाए जाते है। यहां पर छटी से यह तात्पर्य है कि जैसे प्राचीन समय में घर में दाई के द्वारा ही बच्चे का जन्म करवाया जाता था तो यह माना जाता था कि यदि बच्चे के जन्म के पांच दिन तक बच्चे व जच्चा को कोई संक्रमण नहीं होता तो बच्चा व जच्चा बिल्कुल ठीक हैं इस खु ाी में छटी मनाई जाती थी और जच्चा गीत गाए जाते थे।

जच्चा गीत

"जागे म्हारे भाग होया से महारे ललणा।
इस ललणा के दादा ने बुलाद्यो।
पढ़ाया दो चारो वेद खंदा दो गुरूकुल म्ह"।।

विवाह सम्बन्धी गीत

प्राचीन समय में लड़के लडकी का रि ता नाई व ब्राह्मण के माध्यम से तय किए जाते थे उस समय बाल विवाह भी कर दिए जाते थे पूर्ण रूप से छानबीन करने के बाद ही रि ता पक्का किया जाता था। जब लड़के व लड़की के विचार आपस में अच्छी प्रकार से मेल खाते है तभी वैवाहिक जीवन अच्छकी प्रकार से चल पाता है। इसलिए कन्या का अपने जीवन साथी के लिए चिन्तित होना एक स्वाभाविक सी बात है तो देखिये इस प्रकार से व इन भाब्दों के द्वारा किस प्रकार वह अपने मन की आ ांका को व्यक्त करती है। यह एक बहुत ही मार्मिक भाब्दावली है–

"दादा देस जांदा परदेस जाइये म्हारी जोड़ी वा वर ढूढिये।

हंस खेले है अपणे दादा की पोती ढूंढ्या सै फूल गुलाब का।

इसमें कन्या धार्मिक संस्कारों की होने के कारण भगवान रामचन्द्र जैसे पति को पाना चाहती है और कौ ाल्या जैसी मां व लक्ष्मण जैसे देवर को पाना चाहती है।

"दादा ऐसा वर ढूढों, बाबुल ऐसा वर ढूढो।

जिसकी कौ ाल्या सी माई, जिसके लक्ष्मण जैसे भाई।"

भात न्यौतने को गीत

विवाह का दिन नि चित हो जाने पर दोनों पक्षों की माताएं अपने घर अथवा अपने भाई के घर भात–न्यौतने जाती है इस प्रथा में बहिन अपने भाई

के घर भाई, भाभी व भतीजे को विवाह का निमंत्रण देने जाती है। ये गीत बहुत ही करूणामयी होते है।

"रै बीरा क्या हे ते न्योतूं बाबुल राजा क्याहें ते काकाअर ताऊ री।

रै बीरा क्या है तै न्योंतू हजारी बीरा जिसते मै ऊजली ।।

रै बीरा भेली ते न्योतू बाबुल राजा, डलिया तै काका अर ताऊ री।

रै बीरा मिसरी के कूजे हजारी बीरा, जिसते मै ऊजली ।। ताऊ री।

रै बीरा क्या है तै न्योंतू हजारी बीरा जिसते मै ऊजली ।।"

बान का गीत

लड़के या लडकी को विवाह से पांच दिन पहले तेल चढाया जाता है। अर्थात् उबटन लगाया जाता है और विवाह वाले दिन बानया तेल उतरना रस्म की जाती है। जिसमें ऋतु के अनुसार गर्मियों में ठंडे पानी से लड़के या लड़की को नहलया जाता है। उस समय यह लोकगीत गया जाता है जो कि बहूत लाकप्रिय है।

"ताता पाणी समुन्दरा का।

पीता न्हावे म्हारे रामचन्द्र का।

बेटा न्हावे म्हारे राजपालका।।"

कन्या पक्ष में पोती अथवा बेटी भाब्दों का प्रयोग किया जाता है।

इसके प चात् कन्या तैयार होकर जब बारात का इंतजार कर रही होती है तब वह उत्सुक्कताव ा इस लोकगीत के माध्यम से पूछती है कि मैं किस प्रकार से देखूं कि मेरे पति बारात लेकर कहां तक पहुंच गए है और कल्पनाओं में उसके दादा क्या उत्तर देते है यह इस गीत के माध्यम से प्रस्तुत है।

लाडो बूझे दादा तै ओ दादा मै किस विध देखण जाऊ रंगोले आ उतरे बांगां मैं

हाथ मै डल्यिां फूलां की ले लाड़ो मालणिया बणके जाओ रंगीले आ उतरे बागां मै।

फेरों के गीत

विवाह रस्म में फेरे की रस्म सबसे महत्वपूर्ण रस्म है अग्नि के चारों तरफ सात फेरे जो कि अब आठ चुके है आठवां भ्रूण हत्या न करने के लिए होता है आजीवन पति पत्नी के रूप में गृहस्थ में प्रवे ा करते है। इस अवसर पर करूण रस पूर्ण गीत गाए जाते जिसमें कन्या के परिवारजनों की अश्रुधारा रूकने का नाम नहीं लेती।

"पहला फेरा ले मेरी लाडो दादा बैठया जड़ मैं,

तेरी ए सुगंध लाडो चढ़ी ए गगन मैं"

इसी प्रकार से दादा, बाबुल, ताऊ, चाचा आदि का नाम बारी बारी से लिया जाता है। वैवाहिक पंरपराओं के अंतर्गत सबसे अधिक मार्मिक माहौल बना देने वाली रस्म होती है, लड़की की विदाई। इस रस्म में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होता जिसके ऑखों से आंसू न निकले । और ऐसा हो भी क्यों न क्योंकि बचपन से जिस आंगन में वह पली बढ़ी है वहां से दूसरे परिवार में उसका जाना सभी के लिए एक हृदय विदारक दृ य होता है। ऐसे में पुत्री के मन में जो उद्गार उठते है उनका तो कहना ही क्या ?

प्रस्तुत है एक विदाई लोकगीत –

1 "मैं तो गुड़िया भूली हो बाबुल तेरे आले म्हं
म्हारी पोती खेलै ए धीचड़ घर जा अपणे

2 रै बीरा इक बार घेरा मै आईये
रै बीरा बाबुल की धीर बधाइये
रै उसनै रो रो सुजालई ऑख
बेटी तो मेरी तड़के डिगर जागी

इसी प्रकार से बाबुल ताऊ, चाचा का नाम लेते रहते है

इसके अतिरिक्त तीज का त्यौहार भी हरियाणा की सांस्कृतिक परम्पराओं के अंतर्गत ही आता है, इसमें भी स्त्रियाँ तैयार होकर झूला झूलने के लिए बाग में जाती है। यह तीज का त्यौहार सावन मास में हाता है इसीलिए अधिकतर तीज के गीतों में सामण भाब्द का प्रयोग होता है। सामण मास में तीज के त्यौहार पर भाई कोथली (सुहाली, मिठाई, बहिन के लिये नए वस्त्र) लेकर बहन के घर जाता है। इसका जिक्र भी तीज के सभी गीतों में देखने को मिलता है। उदाहरण स्वरूप तीज का एक **लोकगीत –**

"हरी–हरी घास या काले–काले बादल।
ठडी पड़ा ए फुहार सखी री।
झूलण जांगी बागां म्हं।।
समण की या रूत मस्तानी।
ओली सोली पड़ा हे फुहार सखी री।
झूलण जांगी बागां म्हं।।
कद का दामण धोला कुरता।
पायां मै रमझोल सखी री ।
झूलण जांगी बागां म्हं।।
बड़ का डाला झुक–झुक जावै।
तीजां का त्यौहार सखी री।
झूलण जांगी बागां म्हं।।

पनघट के गीत

हरियाणा राज्य के अंतर्गत समस्त परिवार के प्रयोग के लिए आज भी बहू तथा बेटियों को ही दूर–दूर स्थित कुओं से पानी लाना पड़ता है। कुओं से पानी भरकर लाना एक बहुत ही कठिन कार्य है। जब बहू सास को कहती है कि जब पानी लाती हू तो सब की नजर हम पर पड़ती है क्योंकि गॉवों में स्त्रियॉ पानी लाने के लिए भी तैयार होकर जाती है तब सास बहू की बातचीत होती है वह इस लोकगीत के माध्यम से यहॉ उदधृत की जा रही है–

"सासड़ पनिया कैसे जाऊॅ, रसीले दोऊ नैना।
बहु चटक पहनो चुनरिया और सिर पर धरो गगरिया।
छोटी नण्दी लेलो साथ रसीले दोऊ नैना।।"

इस प्रकार हरियाणा कि सभी परंपराओं में संगीत पूर्ण रूप से रचा व बसा हुआ है, चाहे वह विवाह से संबंधित हो, त्यौहार से, व ऋतुओं से, समाज से संबंधित प्रत्येक सामाजिक क्रिया कलापों में संगीत का वि ोश महत्व है। इसके अतिरिक्त हम यदि ये कहे कि सामाजिक परम्पराओं व संगीत का स्थान एक दीपक व घी के समान भाक्ति है तो मुझे कोई अति योक्ति नहीं होगी। क्योंकि भावों को प्रद ित करने की भाक्ति जितनी संगीत कला में है अन्य किसी कला में नहीं इसलिए अन्त में यह कहना चाहॅूगी कि संगीत ही हमारी सामाजिक व सांस्कृतिक परम्पराओं का प्राण है, और सदा रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. लोक साहित्य विम र्ा : डा0 स्वर्ण लता अग्रवाल, चम्पालाल, राका एंड कम्पनी। जयपुर।
2. लोक साहित्य की भूमिका : डा0 कृश्ण देव उपाध्याय। प्रयाग संगीत सम्मेलन प्रयाग
3. लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन : डा0 कुलदीप, प्रका ाक डा0 रामगोपाल परदे ाी। बैतुल बिल्डिंग आगरा।
4. लोकसंगीत अंक : लोकधुनों की धड़कन।
5. हरियाणा प्रदे ा का लोकसाहित्य : डा0 भांकर लाल यादव।
6. हरियाणा के लोकगीत : डा0 भांकर लाल यादव।
7. हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा, डा0 पूर्णचन्द भार्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़।
8. लोक साहित्य विज्ञान : डा0 सत्येन्द्र, ि ाव लाल अग्रवाल एंड कम्पनी।
9. भारतीय लोकगीतों में हरियाणा का योगदान : डा0 रमाकान्त, सत्यम् पब्लि िंग हाऊस, नई दिल्ली।
10. संगीत निबंध माला, पं0 जगदी ा नारायण पाठक, पाठक पब्लिके ान्स, 27, महाजननी टोला इलाहाबाद।
11. भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत, अंजलि मित्तल, कनिश्क पब्लि ार्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।
12. भारतीय लोक वाद्य, डा0 लालमणि मिश्र साक्षात्कार :– डा0 अनीता कुन्डु – सहायक प्रोफेसर भगत फूलसिंह महिला वि वविद्यालय (खानपुर कलां) सोनीपत

चौधरी रघुविन्द्र मलिक जी (रोहतक) (हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत के एक मात्र संरक्षक)